[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3454

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गुरू–शिष्य परम्परा बनाम दूरस्थ शिक्षा कथक नृत्य के संदर्भ में

डॉ. प्रियंका वैद्य
सहा. प्राध्यापक
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

गुरूब्रह्माः गुरू र्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूर्साक्षात् परब्रह्मः तस्मैं श्री गुरूवे नमः।।

यह श्लोक भारतीय दर्शन, संस्कृति व परम्परा में गुरू के स्थान को दर्शाता है। हमारी प्रत्येक यज्ञ आहुति में, हर पूजा में इस श्लोक को बोला जाता है। क्या यह हमारे जीवन में गुरू के स्थान को नहीं दर्शाता? भारतीय दर्शन में मनुष्य को कर्म और ज्ञान के समन्वित रूप से ही स्वीकार किया गया है। उसके ये दो रूप ही उसे समाज में पहचान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में मार्ग प्रशस्त करते हैं। माता–पिता मनुष्य को जन्म देने के कारक हैं, परन्तु बुद्धि, ज्ञान व कर्म का प्रकाश गुरू के द्वारा ही मनुष्य को प्राप्त होता है। आज की पीढ़ी नये ज्ञान के प्रकाश में जो कि वैज्ञानिक ज्ञान है, कम्प्यूटर द्वारा एवं इंटरनेट द्वारा प्राप्त है, को सम्पूर्ण मान गुरू की महत्ता को भूलती जा रही है। परंतु इस सब के पीछे भी मनुष्य का ज्ञान, उसकी योग्यता है और इस ज्ञान और योग्यता से उसको परिचित कराने वाला गुरू ही है। गुरू के द्वारा प्रदत्त ज्ञान और योग्यता से ही मनुष्य अपने जीवन को सुखमय और सम्पन्न बनाता है। जिस प्रकार से कबीरदास जी ने कहा है कि –

सतगुरू की महीमा अनंत किया उपकार।
लोचन अनत उघाडिया, अनंत दिखावण हार।।

गुरू जो अज्ञानता और अविद्या का अंधकार दूर करके हमें ऐसी दिव्य दृष्टि प्रदान करता है जिससे हम उस निराकार रूपी ब्रह्म को भी देख सकते हैं ऐसे गुरू को नमन करते हुए शोध प्रपत्र में गुरू–शिष्य परम्परा को एवं वर्तमान में प्रचलित इंटरनेट व कम्प्यूटर द्वारा दी जा रही दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में विचार व्यक्त किये हैं। शास्त्रीय नृत्य कला की शुद्धता, उसकी प्रामाणिकता एवं उसका सौन्दर्य बोध नृत्य की सही पहचान कराने की जिम्मेदारी गुरू पर होती है। गुरू द्वारा प्रतिभा को विकसित करना कला के लिये अत्यन्त आवश्यक है, तभी नृत्य की धरोहर को शिष्य संजो सकता है, जिससे कि नृत्य कला सुरक्षित रह सकती है।

शास्त्रीय नृत्यों में जहाँ घरानेदारी परम्परा से यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है वहीं लोक नृत्यों में भी कथावाचन, चारण, ढाढा–ढाढिन, नट, भाट, घवला जाति के लोग पीढ़ी दर पीढ़ी इस लोक परम्पराओं का निर्वाह करते चले आ रहे हैं, ये उनकी जीविकोपार्जन का साधन भी हैं, और लोक रंजन का साधन भी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् दरबारों में कार्यरत राजनर्त्तकों को सरकार ने सांस्कृतिक केन्द्रों व कथक केन्द्रों का प्रमुख व नृत्य गुरू पद पर शोभित किया। कई विश्वविद्यालय नृत्य को बढ़ावा देने के लिए खोले गये, जिससे ज्यादा से ज्यादा सामान्य जन नृत्य में रूचि पैदा करे व अच्छी तालीम हासिल कर सके। कथक नृत्य जो पहले सामान्य जनता में हेय की दृष्टि से देखा जाता था, कथक केन्द्र व विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रमों की तरह प्रतिष्ठित गुरूओं के द्वारा सिखाया जाने लगा। लोगों में रूचि बढ़ी और आज कथक उत्तर भारत ही नहीं भारत के प्रतिष्ठित शास्त्रीय नृत्यों में से एक है।

महाविद्यालयीन शिक्षा पद्धति के प्रारंभ होने से जहाँ पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही नृत्य शिक्षा सामान्य जनता तक पहुँची, वंही जो गुरू अपनी शिक्षा अपने गंडाबंध शिष्यों तक ही सीमित रखते थे, वो ज्ञान भी दूसरे घराने के शिष्यों एवं केन्द्रों में नृत्य सीखने वाले विद्यार्थियों को मिलने लगा। प्राचीन एवं ऐतिहासिक धरोहर का ज्ञान किताबों के रूप में छपने लगा। सेमिनार, कार्यशालाओं ने नृत्य को नई सोच व नया रूप देना आरंभ कर दिया। शहरी एवं नई पीढ़ी के लोग नृत्य में अपनी नई शैली को जोड़ नये प्रयोग करने लगे। कथक जो कि एक प्रयोगशील व सृजनात्मक नृत्य है, इसमें नई पीढ़ी के कलाकारों ने नई दृष्टि व प्रयोगों से दर्शकों में स्थान बनाया है। महाविद्यालयीन शिक्षा से कुछ कमियाँ भी आई जो पाठ्यक्रम व शिक्षा से संबंधित था, जहां पहले वर्षों की तपस्या से गुरू अपने शिष्य को रात–दिन नृत्य की आग में तपाकर कलाकार बनाते थे, वहीं अब मात्र 5 वर्षों में डिग्री व डिप्लोमा लेकर नई पीढ़ी तैयार हो रही है। प्रश्न ये उठता है कि क्या कला को पाठ्यक्रम में बांधा जा सकता है? सभी छात्रों को एक कक्षा में एक जैसी शिक्षा से योग्य छात्रों का अहित नहीं हो रहा? ऐसे में योग्य छात्रों को नृत्य की उच्च शिक्षा के लिये फिर से योग्य गुरू की शरण में जाना ही पढ़ता है। तो फिर हमें यह मानने में परेशानी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

क्यों? कि महाविद्यालयीन शिक्षा से गुरू शिष्य परम्परा ज्यादा श्रेष्ठ कलाकार देती है। क्योंकि महाविद्यालयीन शिक्षा नृत्य शिक्षा तो देती है, परंतु कलाकार गुरू शिष्य परम्परा से ही मिलते हैं।

इसी प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सरकार ने अभियान चलाया 'सर्व शिक्षा अभियान' जिसमें शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया गया। स्वतंत्रता से पहले भी गांवों में स्वतंत्रता की ज्योत को जाग्रत करने के लिये चारण, भाट व गायकों की टोली नाटक व गीतों के माध्यम से लोगों में आजादी के लिये जोश भरती थी। वही काम सरकार ने कुछ सामाजिक संस्थाओं को दिया वे नुक्कड़ नाटकों व गांवों की चौपालों में उनकी क्षेत्रीय भाषाओं में उनके नृत्यों व लोक नाट्यों के माध्यम से पुरानी कुरीतियों को दूर कर नई दिशा में आगे बढ़ाने का प्रचार करने लगे। इस दिशा में इगनू व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित कई कार्यक्रम जिसमें प्रौढ़ शिक्षा, विज्ञान, कृषि, दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, बाल शिक्षा, बाल–विवाह ऐसे कई सामाजिक व साहित्यक विषयों पर कार्यक्रम चलाये जिन्हें फिल्मों, दूरदर्शन, रेडियो व चलित चलचित्रों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया गया। इन कार्यक्रमों को इन्हीं की क्षेत्रीय भाषा में गीत, संगीत व नृत्य के माध्यमों से दृश्यात्मक व मनोरंजक माध्यम से बताया गया जिसका असर लोगों में अच्छा रहा। कथक कलाकार स्पिक मैके जैसी संस्थाओं व लोक कल्याण संस्थाओं से जुड़कर विभिन्न उत्सवों के माध्यम से गांवों व छोटे शहरों में आयोजनों में हिस्सा लेने लगे। जनता को नृत्य से जोड़ने के लिये कई प्रयोग किये जैसे बिरजू महाराज ने नृत्य केलि में कबड्डी, खो–खो और चौपड़ जैसे खेलों को जोड कर नृत्य प्रदर्शित किया, अनिता ओरड्या जी ने राजस्थानी–पृष्ठभूमि, परिवेश और भाषा को लेकर नवीन प्रयोग किये। उमा शर्मा जी ने गज़ल को कथक में जोड़ा, कुमुदिनी लाखिदा जी ने योग को नृत्य से जोड़ा साथ ही अपने बैले में 'इलेक्ट्रॉनिक म्यूजिक' का प्रयोग किया। इसके साथ ही आधुनिक रंगमंच पर 'एब्स्ट्रेक्ट थीम' पर कथक रचनाओं को तैयार कर कथक को एक नया मोड़ दिया। शोभना नारायण जी ने ब्रजभाषा, संस्कृत, परशियन भाषा के साहित्य पर नृत्य कर इसे विदेशों में भी प्रचारित किया। नवीन प्रयोगों में डॉ. मुरारी शर्मा जी ने राजस्थानी भाषा में ही कथक नृत्य की कुछ बंदिशे बताई। वर्तमान में भी कई कलाकार कथक को नवीन प्रयोगों के साथ जनता से जुड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

वर्तमान युग, आधुनिक व वैज्ञानिक युग है इसलिये अगर हमें अपनी कला व संस्कृति को सामान्य जनता में प्रचारित करना है तो नृत्य कलाकारों को आधुनिक तरीके व वैज्ञानिक उपकरणों को आजमाना पड़ेगा ताकि वो अपनी कला को और अधिक प्रचारित कर सके। इलेक्ट्रॉनिक तबला, इलेक्ट्रॉनिक लहरापेटी जैसे नवीन आविष्कार ने नृत्य को सुगम कर दिया है। अब कलाकारों को रियाज के लिये तबला व लहरें वादकों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। वे अपना रियाज कर प्रदर्शन के लिये तैयार हो सकते हैं। आजकल तो बड़े–बड़े उत्सवों में कलाकार अपनी प्रस्तुतियों को रिकॉर्ड करवाकर ले जाते हैं। इसके कई लाभ हैं, जैसे रिकॉर्ड करने से कई वाद्यों का उपयोग कर सकते है, रिर्हस्ल में आसानी होती है, गायक व वादक कलाकारों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, एक रिकार्डिंग में कई कार्यक्रम हो जाते हैं, ऐडिटिंग से जोड़ा व घटाया जा सकता है, सी.डी. रिकार्ड कर इसे बाजार में ला सकते हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा कलाकारों को इसका लाभ मिलता है।

नेशनल कौंसिल फॉर टीचर ऐजुकेशन ने दूरस्थ शिक्षा के लिये इगनू ने एक ऐसा कोर्स वर्क तैयार किया है, जिससे वह व्यक्ति जो शिक्षा में अपना केरियर नहीं बनाना चाहता ललित कला में बना सके। इसके लिये इंटरनेट व टेलीविजन के माध्यम से लाइव नृत्य वर्कशॉप, प्रिंटेड मटेरियल, किताबें व ऑडियो, विडियो सामग्री आप पा सकते हैं। ॅ ैज्‍।ए ॅ प्‍डैए एकलव्य, इं.क.सं.वि.वि., गांधर्व मंडल ऐसी कई संस्थायें है जो ब्वदजतंबज च्तवहतंउे चलाती हैं जिसमें नृत्य कला को टपेनंस ॅवतीेवच के जरिये सीधे बड़े–बड़े गुरूओं से जोड़ा जाता है। वे विडियो, सी.डी. के जरिये बंदिशे सीख कर कार्यक्रम कर सकते हैं। इंटरनेट पर आज एक गाने को पचास लोग अलग–अलग तरह से नृत्य प्रस्तुत करके बताते हैं। दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत गांव व छोटे शहरों के लोग भी थ्नेपवद ब्वदजमउचवतंतलए व डवकमतद क्ंदबम वितउे को समझने लगे हैं। टेलीविजन पर दिखाये जाने वाले टैलेंट हंट ने नृत्य को पूरे देश में प्रचारित किया। छोटे–छोटे कस्बों से कलाकारों को नया मंच मिलने लगा है। आज कलाकार केवल एक नृत्य प्रकार तक सीमित नहीं रह सकते, उन्हें शास्त्रीय के साथ–साथ दूसरे नृत्य प्रकारों का भी ज्ञान आवश्यक हो गया है। बड़े–बड़े कलाकारों ने फेसबुक, व इंटरनेट के माध्यम से अपनी कला को दूर–दूर तक प्रचारित करने का प्रयास करना शुरू कर दिया। इंटरनेट के माध्यम से आप बिरजू महाराज से कथक नृत्य की तालीम ले सकते हैं तो माधुरी दीक्षित से बॉलीवुड डांस की। इस प्रकार नृत्य को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सीमित न कर पूरे देश में संचार माध्यमों से फैलाया जा रहा है।

परंतु इतना सब होने पर भी कथक के भाव क्या इंटरनेट के माध्यम से सिखाये जा सकते हैं। गलती करने पर हस्तक सुधारे जा सकते हैं, तिग्दा दिगदिग थेई में पांच पैर लगते हैं और ये ठाट का डोरा होता है, ये आमद की परिभाषा होती है, तिहाई इस तरीके से भी की जा सकती है, ये सब क्या किताबों, इंटरनेट व ऑडिरूा, विडियो से सीखा जा सकता है? पैरों की तैयारी, अंगों का बनाव, अदायगी क्या ये सब हो सकता है? बिना गुरू के रस, भाव व अभिनय कैसे सीखा जा सकता है? और जहां रस नहीं वहां नृत्य कैसा? रसविहीन नृत्य तो मशीन ही कर सकती है। जिसमें भावनायें नहीं हो। इसलिये अंत में

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

इतना ही कहना चाहूंगी कि नृत्य सीखा जाये पूरी लगन से गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा एवं गुरू भी पीढ़ी–दर–पीढ़ी के ज्ञान को वर्तमान तरीके अपना कर, वर्तमान आधुनिक पद्धतियों को अपना कर, नवीन प्रयोगों के साथ शिक्षा दे। नवीन प्रयोग आधुनिक परिवर्तनशील युग के लिये रोचक व आकर्षक हैं, जिसके फलस्वरूप कला का व्यापक प्रचार होता है, वं उसकी लोकप्रियता बढ़ती है। आधुनिक काल में घरानों की रूढ़िवादिता प्रायः समाप्त होती जा रही है। सभी घरानों के नृत्यकार व शिष्य वर्ग नवीन खोज द्वारा कथक नृत्य को प्रगति के पथ की ओर अग्रसर करने में संलग्न है। कथक नृत्य–शैली में नृत्यनायिका का निर्माण एवं आधुनिक फ्लैश बैक व प्रकाश–ध्वनि का प्रयोग जैसे सर्जनात्मक प्रयासों के साथ कथक नृत्य शैली दिन–प्रतिदिन सभी दूर प्रगति की ओर अग्रसर है। अतः कबीरदास जी के शब्द में –

गुरू कुम्हार सिस कुम्भ है, गाढ़ि–गाढ़ि काढ़े खोट।
आंतर हाथ सहार दै, बाहिर बाहै चोट।।

संदर्भ –

1) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य – डॉ. माया टाक

2) कथक दर्पण – तीरफ राम आजाद

3) कथक नृत्य शिक्षा – डॉ. पुरू दाधीच